वेदों में निहित जीवन रहस्य

- डा. बिहारीलाल मीना

व्याख्याता-संस्कृत

राजकीय महा वद्यालय, गंगापुर सटी(राज.)

प्रस्तावना

भारत में आर्यों के इतिहास की चर्चा से पूर्व उनके साहित्य — वेदों का संक्षेप में उल्लेख करना उचित होगा, क्योंकि आर्यों के सम्बन्ध में हमारी सारी जानकारी का आधार वे ही हैं। इसके सवा और भी अनेक मुख्य कारण हैं, जिन के कारण वेदों को मुख्य स्थान दिया जाना चाहिए। वेद न केवल भारतीय आर्यों के वरन हिन्द —जर्मन नाम से पुकारे जाने वाले समस्त आर्य-समूह के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। इस प्रकार समस्त विश्व-साहित्य में उनका अपना व शष्ट स्थान है। इसके अतिरिक्त ३००० वर्ष से भी अधिक समय से वेदों को लाखों करोड़ों हिन्दू अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर —वाक्य मानते चले आ रहे हैं। निरन्तर परिवर्तन और विकास होते रहे, पर सदा ही हिन्दू संस्कृति एवं धर्म के आधार वेद ही रहे हैं।

वेद परिचय

'वेद' शब्द का अर्थ 'ज्ञान', 'महत ज्ञान' अर्थात् 'प वत्र और आध्यात्मिक ज्ञान' है। वह न तो कुरान की तरह कसी एक व्यक्ति की साहित्यिक कृति है और न बाइबिल अथवा त्रि पटक की तरह कसी एक काल में कुछ निश्चित पुस्तकों से इनका संकलन किया गया है। वह तो ऐसा साहित्य —भंडार है, जो अनेक शताब्दियों के बीच एक सत हुआ है और जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी लोग कण्ठस्थ कर सुरक्षित रखते आए हैं। इसके अन्तर्गत तीन प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ आती हैं। इनके प्रत्येक वर्ग में अनेक स्वतन्त्र पुस्तकें हैं, जिनमें से कुछ का अस्तित्व तो अब भी है, परन्तु कुछ लुप्त हो चुकी हैं। ये तीन वर्ग इस प्रकार हैं:

- संहिता अथवा मंत्र —जैसा क नाम से प्रकट होता है, इस साहित्य में मंत्रों, प्राथनाओं, वशीकरणों, प्रार्थना- व धर्यों और यज्ञ- व धर्यों का संग्रह है।
- ब्राह्मण-ग्रन्थ—वे विशाल गद्य-ग्रन्थ हैं, जिनमें मंत्रों के अर्थों पर वचार किया गया है, उनके प्रयोग का वधान बताया गया है, यज्ञ- वधान से सम्बन्धित उनकी उत्पत्ति की कहानियाँ कही गयी हैं और यज्ञों का गुप्त रहस्य प्रकट किया गया है। संक्षेप में इनमें एक प्रकार से भारतीयों का आदिम धर्म और दर्शन सुरक्षित है।
- आरण्यक और उपनिषद —इनमें से कुछ तो ब्राह्मणों में ही निहित हैं अथवा उनसे सम्बद्ध और कुछ स्वतन्त्र रचना के रूप में पाए जाते हैं। इनमें आत्मा, परमात्मा, संसार और मनुष्य-सम्बन्धी ऋष-मुनियों के दार्शनिक वचार आबद्ध हैं।

व भन्न सम्प्रदायों के पुरोहितों और सूतों में बहुसंख्यक संहिताएँ प्रचलित रही होंगी। कन्तु अधिकांश एक ही संहिता के व भन्न पाठ हैं। तथा प चार ऐसी संहिताएँ हैं जो एक –दूसरे से भन्न हैं और जिनमें से प्रत्येक के अनेक पाठ हमें प्राप्त हैं।

- ऋग्वेद संहिता: मंत्रों का संग्रह
- अथर्ववेद संहिता: जादू और मानसहरणों का संग्रह।
- सामवेद संहिता: गेय पदों का संग्रह जिनमें अधिकांश मंत्र ऋग्वेद के ही हैं।
- यजुर्वेद संहिता: यज्ञ-वधियों का संग्रह। इस संग्रह के दो स्पष्ट भेद हैं : कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद।

ये चारों संहिताएँ चार भन्न वेदों के आधार हैं तथा वैदिक साहित्य के दूसरे तथा तीसरे वर्ग की प्रत्येक प्रकार की रचनाओं —अर्थात् ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषदों—में से ही एक का इनमें से कसी न कसी संहिता के साथ सम्बन्ध है और वह उस विशेष वेद की सम्बद्ध रचना मानी जाती है। इस प्रकार ऋग्वेद की न केवल अपनी संहितायें हैं वरन् ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद भी हैं। यही बात अन्य तीन वेदों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। इस वस्तुतः साहित्य की प्रत्येक रचना वेद की श्रेणी में गनी जाती है और उनके कर्ता ऋषि कहे जाते हैं। कभी-कभी इन ऋषियों के नाम से कसी एक व्यक्ति का तात्पर्य न होकर वर्ग से होता है। यथा वश्वामित्र की कही जाने वाली ऋचाएँ सम्भवतः उस नाम के कसी एक ही व्यक्ति द्वारा न रची जाकर उस परिवार अथवा सम्प्रदाय के व भन्न व्यक्तियों द्वारा रची गयीं। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि ऋचाओं के रचयिताओं में स्त्रियाँ और निम्नतम वर्ग के लोगों के भी नाम मिलते हैं।

वेदों में निहित जीवन रहस्य

वेदों में एकतत्त्व , लोकतंत्र, मूल्यपरक अर्थव्यवस्था , समतामूलक समाज रचना , सकारात्मक दृष्टिकोण , राष्ट्रीय भावना , एकात्मभाव, पारिवारिक सामंजस्य इत्यादि विषयक अनेक चरस्थायी व सत्यनिष्ठ जीवन रहस्य मिलते हैं, जिनका व्यवहार में परिपालन एक खुशहाल व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं वश्व के लिये आवश्यक है। दृष्टान्त रूप में कुछ जीवन रहस्यों का संकेत करना यहाँ समीचीन होगा।

- भारतीय एकात्मभाव का मूलस्रोत वेद ही हैं। वेद कहते हैं कि व्यष्टि और समष्टि दोनों एक हैं। मूलतत्त्व एक आत्मा है, जो सर्वत्र व्याप्त है।¹ सभी देवता एक ही तत्त्व में वलीन हो जाते हैं। प्राणीमात्र उस एक तत्त्व के ही व भन्न रूप है।² वह अदिति है, वही सबका माता , पता, पुत्र आदि सबकुछ है।³ जब जगत में सब कुछ एक ही तत्त्व है तो समाज जीवन में ऊँचनीच , घृणा व अलगाव को स्थान नहीं हो सकता।⁴

उक्त वचार समाज जीवन में चरितार्थ हो जाये तो कसी भी देशकाल में कोई समस्या नहीं रह सकती। वेद व श्वप्रेम की प्रथम भारतीय अभ्यंजना है, जो वैदिक संस्कृति को वैश्विक व मार्गदर्शक संस्कृति बनाती है।

- वेद पारिवारिक जीवन के लए आपसी सामंजस्य, सम्मान एवं प्रेम पूर्ण वर्ताव की शिक्षा देते हैं। प्रसद्ध सौमनस्य-सूक्त में माता पता और पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहिन और पति-पत्नी में आपसी सामंजस्य की कामना की गई है।^५
- परवर्ती भारतीय साहित्य एवं समाज में अस्पृश्यता का दोष मलता है। वेद तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित ग्रन्थ है। अतः वेद वाणी में पंथ, जाति, धर्म आदि कसी भी आधार पर भेदभाव के लए कोई जगह नहीं है। वर्णव्यवस्था के निर्देशक पुरुषसुक्त का मंत्र चारों वर्णों के कार्यक्षेत्र का वभाजन करता है, ऊंचनीच की भावना का संकेत नहीं।^६
- वेदों में राजनीति के सूत्र भी मलते हैं। वेदों में लोकतंत्र के सूत्र स्फूर्त रूप में प्राप्त हैं। वेद कहते हैं- जन कल्याण लोकतंत्र में ही है ^७ और नागरिक ही राजा बनाते हैं।^८ वेद शत्रुराष्ट्र के प्रति व्यवहार के मार्गनिर्देशक सद्धान्तों का भी निरूपण करते हैं। वे कहते हैं क शत्रुराष्ट्र के सर उठाते ही उसका नाश कर देना चाहिए। इस वषय में प्रमाद न हो।
- आर्थिक जीवन के मूल्यवान रहस्यों का उद्घाटन करते हुए वैदिक साहित्य संग्रहवृत्ति की मनाही करता है। वेद की शिक्षा है क मनुष्य यदि सौ हाथों से कमाये तो हजार हाथों से खर्च भी करना चाहिए। मनुष्यमात्र को परस्पर जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। क्यों क रथ के पहियों की तरह धन कभी एक व्यक्ति के पास नहीं टिकता।^९
- वेद मनुष्यों के लए कल्याण मार्ग पर चलने की कामना करता है। वेद चाहता है क हम सन्मार्ग पर चलते हुये दानी, अहिसंक व ज्ञानी व्यक्तियों की संगति करें और उनके उत्तम गुणों का अनुसरण करते रहें।^{१०}
- वेद एक राष्ट्रीय सोच को एक सत करने की प्रेरणा देते हैं। वैदिक साहित्य की कामना है क सभी सामाजिक जन हृदय व वचार से एक समान हो और उनमें परस्पर प्रेमभाव व्याप्त रहें।^{११} सभी नागरिक कसी भी देशकाल में वेदवाणी को जीवन में चरितार्थ कर लें तो कभी भी राष्ट्र जीवन में संकटों का सामना नहीं करना पड़े।
- वेद हाथ पर हाथ रखकर बैठने के बजाय कर्मशीलता की शिक्षा देते हैं। वेद का महान संदेश है क कर्म और परिश्रम से ही मनुष्य प्रगति करता है-

कुर्वन्नेवेह कर्माण जिजी वषेच्छतं समाः (युजवेद ४०.२)

वेद कहते हैं क परमेश्वर मेहनती लोगों में बसता है। वे उद्घोष करते हैं- एक हाथ से कर्म करो दूसरे हाथ में सफलता लो।^{१२} वेदों की भावना यह है क जीवकोपार्जन के

साधन भी प वत्र होने चाहिए। साध्य. साधन की प वत्रता के मूल स्रोत वेद ही हैं।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार व वध तापूर्ण जीवन रहस्यों के उद्घाटन में वेद अमूल्य ग्रंथ-रत्न है। व्यक्ति के लए सन्मार्ग, परिवार के लए मेल मलाप, सामाजिक जीवन के लए समता, राष्ट्र के लए लोकतंत्र की प्रतिष्ठा व एक समान सोच, एकात्मभाव पर आधारित वश्वप्रेम, परिश्रम की प्रतिष्ठा, न्यायपूर्ण आर्थिक जीवन आदि वैदिक साहित्य में निहित ऐसे जीवन रहस्य हैं , जो वश्व साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ हैं।

संदर्भ

१. यजुर्वेद ४०.१
२. अथर्ववेद १३.४.१२.१३
३. ऋग्वेद १.८९.१
४. वाजसनेयी संहिता ४०.६
५. अथर्ववेद ३.३०.२.३
६. ऋग्वेद १०.९०.१२
७. अथर्ववेद ८.९.९.
८. वही ३.५.७
९. ऋग्वेद १०.११७.५
१०. वही ५.५१.१५
११. वही १०.१९१.२, ४
१२. अथर्ववेद ७.५०.८